डॉ. सतीश चन्द्र भगत

दिवाली

झिलमिल झिलमिल
जगमग करते,
खिल - खिल हँसते
दीपक जलते |

नील गगन से
आ उतरे हैं,
नन्हें तारे
भू - बिखरे हैं |

कोना - कोना
करे उजाला,
दुम दबा गए
वो तम काला |

मिलजुल खाते
खील- मिठाई ,
आज दिवाली
जगमग आई |